R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विभा श्रीवास्तव विशेषांक

वर्ष 25 | अंक 37 | रविवार, इलाहाबाद, 1 फरवरी 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार विभा श्रीवास्तव

उमेश श्रीवास्तव

विभा की कविता में ,

जीवन का संसार मिले।

खिले-खिले उपवन में ,

सारा ही उद्धार सिले।

तो बात हो रही है गोंडा की कवयित्री विभा श्रीवास्तव की । कवयित्री विभा श्रीवास्तव की कविताओं में जीवन का संसार और जीवन का विस्तार का स्वरूप मिलता है । कविताओं के माध्यम से प्रकृति का सुंदरतम चित्रण करना विभा की कोमल भावनाओं का दिग्दर्शन कराता है । गोंडा में रह रही कवयित्री विभा श्रीवास्तव एक अध्ययनशील और सुसंस्कृत व्यक्तित्व की धनी है । उनकी कविताओं में हर प्रकार के रसों का स्वाद मिलता है । अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में एक मुकाम गढ़ रही विभा की रचनाएं अपने आप में निराली हैं बानगी देखिए।

पहली बानगी

मै सुप्राबुद्ध और पामिता
की बेटी यशोधरा,
करती विलाप सम्मुख बैठ,
तेरे ओ धरा।

दूसरी बानगी

मै दिन मे सूरज ,
रात मे चांद बन गई हूं ।
मै खुद ही अपनी ,
पहरेदार बन गई हूं।

तीसरी बानगी

कुख उबल रहा था मेरे अंदर,
धधक रही थी चिंगारी,
दिया तोड़ मैने उसको ,
मेरे वृक्ष रूपी स्वप्न को,
काट रही थी जो आरी।

कवियत्री विभा श्रीवास्तव की इसी प्रतिभा को देखते हुए उन्हें जनवरी 2026 का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा ।

अंत में

कविताओं के दौर में ,

लिखना तुम सुंदर बातें ।

जीवन के सब धर्म कर्म की ,

सुंदर और सुमधुर सांसें ।

उमेश श्रीवास्तव

जीवन संघर्ष

विभा श्रीवास्तव

जब ईश्वर का साथ हो तो संघर्ष संघर्ष नहीं सीख बन जाती है वह बात और है की समझ बाद में आती है। दुनिया के चका चौंध में मेरा मन कभी ल गा नहीं और देखा देखी का जीवन मुझे कभी भाया नहीं।

आप कितने ही संपन्न परिवार से क्यों ना हो पर माता-पिता का साया हटते ही जीवन सूना हो जाता है और जिसने बचपन से ही पिता की छत्रछाया ना पाया हो उसका वह सूनापन कोई नहीं भर सकता । पिता के न होने पर ऐसा लगता है जैसे चार दीवारें तो हैं पर छत नहीं है ।मां ने अपना जीवन पूरी तरह से नीरस कर लिया। शायद समाजिक स्थितियो को देखते हुए।

घर की सबसे छोटी बहू शादी के केवल 3 वर्ष और दो बच्चे एक मै जो डेढ़ वर्ष की थी और एक मेरा भाई जो 4 महीने का था । उन्होंने ससुराल की दहलीज ना पार करने का फैसला लिया।

मैं थोड़ी संकोची और कम बोलने वाली लड़की थी। जिससे मुझे अपनी बात कहने में ज्यादा परेशानी होती थी।

पर मां की रंगहीन जीवन को मैं रंगों से कैसे भरूं यह सोचते - सोचते मुझे रंगों से मोहब्बत हो गई। मेरी कुछ पंक्तियां-' मैं इंद्रधनुष सा छा जाती हूं ,मां सिर्फ तेरे लिए।'

आंगन में जब चौक बनती थी पता ही ना चला उस चौक पर चिराग की रोशनी से अपनी ही नृत्य करती हुई परछाई को देखते हुए कब गीत रचना सीख गई।

और हर नीरसता को शब्दों में पिरोकर कब कविताएं बनाना सीख गई ।अचरज की बात यह कि यह कलाएं अब कली से फूल बन रही थी और मैं अभी भी उनसे अनभिज्ञ थी।

सबसे पहले मेरी संस्कृत के अध्यापिका ने मुझे काव्य पाठ के लिए उत्साहित किया जब पहली बार मैंने अपने एक कविता अपनी सहपाठी छात्रा मित्र को उसके जन्मदिन पर एक पेज की बधाई कविता लि खकर दी ,उपहार के तौर पर ।

उसने पूरी कक्षा के सामने मुझे यह कविता पढ़ने को बोली तो मैंने पहला काव्य पाठ अपने मित्र के लि ए किया। अनजाने में ही सही, और उस वक्त से मेरी साहित्यिक यात्रा शुरू हुई ।

काव्य गोष्ठिया अधिकतर रात्रि में होती थी तो मेरा जाना संभव नहीं हो पाता था ,क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि मेरे पीठ पीछे मेरी मां को कोई कुछ सुना पड़े और ना ही कभी परिवार में इसके विषय में बात की। अब पर अब सोचती हूं की बात करती तो शायद अनुमति भी मिल जाती आशा थी ।

हिंदी, इंग्लिश और कला मेरे प्रिय विषय बन चुके थे अंग्रेजी से पोस्ट ग्रेजुएशन करने के लिए को-एजुकेशन कॉलेज में एडमिशन लेना जरूरी था। इसके लिए मेरा भाई आगे आया और मेरा को-एजुकेशन कॉलेज में एडमिशन करवाया ।

धीरे-धीरे मैं इंग्लिश में लिखना शुरू किया और साथ में सिविल सर्विसेज की तैयारी भी। मेरे प्रोफेसर ने मुझे अंग्रेजी में लिखने में बहुत मदद किया और प्रोत्साहन भी दिया ।

उसी बीच मेरी विवाह की तैयारी शुरू हो गई और विवाह उपरांत सभी कार्य और पढ़ाई रुक गई, ससुराल और फिर मां बनने की जिम्मेदारियों ने घेर लिया ,मैं खुद को एकदम भूल चुकी थी।

क्लास की एक अच्छी और टैलेंटेड विद्यार्थी अब घर गृहस्ती के काम करते-करते ही सीख रही थी ।

एक कठिन अध्याय जीवन का मेरे सामने था जिसे मैं अकेली ही हल कर रही थी, हर रोज एक नई परीक्षा बिना तैयारी के मेरे सामने थी और मदद किसी की नहीं, एकांतवास जैसा महसूस होने ल गा था।

जीवन एकदम से रंगहीन हो चला था । मेरा पुत्र 5 वर्ष का हो रहा था ,एक रात अर्धरात्रि में मां सरस्वती ने जैसे मुझे फिर से जगाया ,नजर के सामने विघ्नहर्ता श्री गणेश जी का एक कैलेंडर जिसमें उनकी सफेद और सुनहरी रंग की फोटो बनी हुई थी ।

मैं उठी अपने ही बेडरूम में इधर-उधर टहलने लगी कोने में एक दफ्ती पड़ी थी ,उसे उठाया बेटे के बॉ क्स से पेंसिल निकाली प्रभु गणेश का चित्र बनाया और एक जीवंत चित्र उभर कर सामने आया ।

6 वर्ष बाद मैंने कोई चित्रकारी की थी मन में एक हर्ष हुआ कि मैं अभी भी कर सकती हूं ,फिर विचार आया रंग ? रंग तो थे ही नहीं जब मेरे पति शनिवार की रात्रि को घर आए मैंने रंग मंगवाया । सफेद और सुनहरा और ब्रश भी फिर मैंने कला की पढ़ाई शुरू की ,पर समय समय मिलता ही नहीं था जिसमें मेरे बेटे ने अलार्म का काम किया मुझे कैनवास पर काम करने को प्रेरित करता रहा ।धीरे-धीरे मेरे कई कैनवस तैयार हो गए उधर लेखन भी फिर से शुरू कर दिया पर इस बार हिंदी में लिखना शुरू किया फिर से आर्ट एग्जीबिशन भी लगे।

फिर एक बार और मां बनने का अवसर मिल ा मुझे ।

इस बार मेरी मानसिक और शारीरिक स्थिति और बुरी हो चुकी थी और मेंटल सपोर्ट कोई देने वाल ा ना था फिर मेरे स्कूल समय की महिला मित्र जो मेरी बहुत खास थी पर शादी के बाद में ससुराल में इतना व्यस्त हो गई की सखी सहेली कला, लेखन सब भूल चुकी थी, उससे मुझे बहुत मेंटल सपोर्ट मिलना शुरू हुआ । मेरे जीवन के उस कष्टकारी दिनों को मैं आज भी याद करती हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

वह समय अंगारो के समान थी मेरे लिए और मेरी सहेली की तर्क सहित बातें ओस की बूंद का काम करती थी उस वक्त। वह दिन कट गए पर वह वक्त मैं आज तक नहीं भूल पाई। मां के हाथों में प्ल ास्टर चढ़ा था वह मेरे पास आ ना पाई पर दिन थे कट गए ।

तीन महीने लगातार ना सो पानी की वजह से मुझे पैनिक अटैक सा महसूस हुआ। याददाश्त बहुत कमजोर हो चुकी थी इसका एहसास मुझे तब हुआ जब एक दिन बेटे की स्कूल की डायरी पर मुझे हस्ताक्षर करना था, हस्ताक्षर करते वक्त मै अपने ही नाम की स्पेलिंग बेटे से पूछ रही थी की क्या मैं यह स्पेलिंग सही लिखी है? बेटे ने बोला हां मां ।

उस वक्त मुझे बहुत जोर से झटका लगा कि मुझे क्या हो गया है पर माता-पिता के सिवा आपकी मानसिक स्थिति और कोई नहीं समझ सकता ।

मैंने अपनी बेटी का चेहरा देखा ,मन से प्रश्न उठा क्या मैं इसे ऐसा ही जीवन देना चाहूंगी? मन में ही उत्तर आया कभी नहीं।

और उस दिन से मैं अपने लिए धीरे-धीरे ही सही जीना सीखने लगी।

किचन मेरा लेखन कार्य स्थल हो गया और एक सबक सीखने को मिला की माता-पिता से बिछड़ने के बाद आपका सच्चा साथी आप स्वयं है,इसलिए अपनी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की जिम्मेदारी भी आपकी स्वयं की है ,किसी और की नहीं।

इधर जिंदगी जितने गम दे रही थी मेरी कल म उतनी ही धारदार होती जा रही थी। पूरी तरह से टूटने के बाद मैं अपने आप को फिर से खड़ा हुआ पाया एकदम नए रूप में जो मैं पहले कभी थी ही नहीं ।

मैं धन्यवाद देती हूं उस परमात्मा को जिसने जीवन की बहुत सी सीख मुझे दी। माता सरस्वती और माता लक्ष्मी की कृपा बचपन से ही मुझ पर बरसती रही और अब माता काली की भी।

अंत में मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगी संघर्ष कभी भी आपको तोड़ने नहीं आती बल्कि आपको कोयल से कोहिनूर बनाने आती है इसमें किसी व्यक्ति विशेष का कोई दोष नहीं होता बल्कि परमात्मा आपको निखारने के लिए ऐसे हालात उत्पन्न करते हैं और फिर संभालते भी वही है ।

संघर्ष वह छीनी और हथौड़ी है जो पत्थर रूपी आपको एक खूबसूरत मूरत में बदल देता है ।

धन्यवाद।

विभा श्रीवास्तव की कविताएं

पहचान बन गई हूं

मै दिन मे सूरज ,
रात मे चांद बन गई हूं ।
मै खुद ही अपनी ,
पहरेदार बन गई हूं।
शिकवे,गिले इजहार,तारीफ,
बुराईयां, अब इनका मुझपे ,
कोई फर्क पड़ता नही ।
मै अपनी ही गलतियाँ सीख ,
गुण, अवगुण की,
परखदार बन गई हूं।
अब न अंधेरो से डर लगता है,
न रौशनी से आंखे चौधिंयाती है।
आत्मा की तेज से ,
मै स्वंय ही ज्योतिपुजं हो गयी हूं।
आंखो मे सच्चाई की चमक,
और हृदय मे ईमान की महक,
दुनियादारी के चक्रव्यूह मे बिना फसे,
मै खुद अपनी पहचान बन गई हूं।

कर्जदारी किसान से

बाजुओ मे ताकत,
हौसला दिल मे लिए।
लगाता दिन व रात अपना ,
फसल उगाने के लिए।
पेट भरा है जहां का ,
हल और बाजुओ के जरिए।
बदला है फिर भी क्यूं शहरो का ,
गांव के लिए नजरिए ।
सूखे ने जला डाला ,
भूख मिटे मशान पे।
खुद के खलिहान मे,
डुबो डाला बरसात ने।
नजर दौडा ले ऐ रखवाले ,
जरा विमान से।
आकर पूछ दिल की हालत ,
एक कर्जदारी किसान से।
बेटी की टूटी शादी,
बेटा हुआ बेरोजगार ।
क्यूं मिट्टी मे ढूंढ रहा हूं ,
जीवन का उपहार ।
पेट भरता हूं सभी का ,
फिर भी मै भूखा हूं।
बरसात का पानी कम पड़ जाए,
इतना मै रोता हूं।

मुश्किल तो होगा

चलना है तुझे मुसाफिर,
जिन्दगी के डगर पर।
कांटो और कंकड़ को ,
दरकिनार कर ।
न डगमगाने दे खुद पर विश्वास,
सम्भल जाएंगे ,कैसे हो हालात।
कमजोर पडा गर तेरा दिल ,
धुंधली नजर आएगी,तुझे मंजिल,
पहला कदम पर तुझे ,
तेरा भूल नजर आएगी ।
जूझ लेगा गर परिस्थितयों से,
तो कांटो मे भी तुझे ,
फूल नजर आएगी ।
मन को मार कर ,
सिसकियाँ न भरना।
वर्ना सिसकियां ,
मौत बन जाएगीं।
तकलीफ न देना ,आंखो को
अश्क बहा के,
कौन पोछने आएगा इन्हे?
तू खुद को ही समझा ले।
कौन है जो गम मे ,
गम को बांट लेगा ।
किसके सहारे है ,
कौन तुझे समझेगा ।
कोई अर्थ नही ,
उद्देश्यहीन जीवन का,
ये जिन्दगी का सफर है,
मुश्किल तो होगा ।

ख्वाब

दूर ही रहना ,
कहीं तुमपे मै ,
अपना अधिकार ,
न समझने लगू ।
दिल के बहुत ,
करीब मत आना,
तेरी दिल्लगी को मै ,
कहीं प्यार न समझने लगू।
तुम एक ख्वाब हो मेरे लिए,
मै एक ख्वाब हूँ तुम्हारे लिए।
क्या जिन्दगी ख्वाबो से
कटती है ...?

मुझको भी थोड़ा बदल जाने दो

आज उडेल दूं गम का समुन्दर
इन पन्नो पर , कि
दिल अब सह नही पा रहा,
और जुबां कह नही पा रहा ।

तुम्हे खुद से जुदा करना ,
इतना आसान तो नही ।
कैसे समझाऊ खुद को, कि
तुमसे प्यार नही ।

शिद्दत से तुमको मैने चाहा,
बदले मे तूने ये दिल तार-तार किया।
खुद से ज्यादा तुमपे ऐतबार किया,
मेरे विश्वास को तूने बेजार किया।

तू भी तरसेगा ,ममुहब्बत के लिए,
बस जिन्दगी का पैमाना बढ़ जाने दो।
तुम्हारी फितरत ही बेवफाई है,
जरा मुझको भी थोड़ा बदल जाने दो।

मै शुक्रिया कहती हूं तुम्हे,क्योकि
तेरा दिया हुआ गम और
मेरी कलम जब मिलती है,
तो कुछ...कमाल ही कर जाती है।

व्यर्थ क्यूं करते हो

हालातो और संघर्षो से,
भला कौन डरा है।
ये तो वो पल है जिससे,
मन और बढ़ा है।
मै बहती नदी हूं ,
रास्ते खुद बना लेती हूं।
मुझे रोकने का प्रयास ,
बार-बार व्यर्थ क्यो करते हो ।
क्यूं बांधते हो ,
पैरो मे बेडियां मेरे,
जो मुझे अब ,
घुँघरुओ की तरह,
लगने लगी है।
और इन हाथो की ,
बेडियों की खनक तो सुनो ,
चूडियो से कहीं कम नही है।
फंदे गले के अब मुझे,
हार लगने लगा।
बेरुखा बर्ताव तेरा,
प्यार लगने लगा ।
आँसुओ की जगह ,
जब मुस्कान ने ले ली हो,
तो सूखे पौधे मे नीर,
डालने का प्रयास ,
बार-बार व्यर्थ क्यों करते हो ।
मै बहती नदी हूं ,
रास्ते खुद बना लूंगी।
जो खो चुका है ,
उसे खोने से क्यूँ डरते हो ।
मुझे रोकने का प्रयास ,
बार-बार व्यर्थ क्यूं करते हो।

एहसास करा जाता है

कभी-कभी कुछ कहने या,
सुनने की जरूरत नही पड़ती।
बस महसूस हो जाता है,
जैसे हवाओ की वो छुअन,
जो शीश से नख तक,
स्पर्श कर जाता है ।
रोम-रोम मे उसकी ,
अनुभूति होती है
और सांसो के साथ ,
सम्भाव हो जाता है
वैसे ही एक स्पर्श ,
होता है प्रेम का ।
जिसे बंया नही ,
कर सकते पर ,
अपनी उपस्थित,
दर्शा जाता है।
निगाहो से निगाह,
का न हटना ,
चुम्बकीय एहसास,
जैसा होना।
बिन छुए ही मन को,
छू जाता है ।
उस पवित्र प्रेम मे,
डूबने का ,
भाव करा जाता है ।
जैसे मीरा और राधा ,
श्री कृष्ण के प्रेम मे ।

खुशियाँ

मुकाम कितने ही ,
क्यों न हासिल कर लो ।
खुशियां तो अपनो के,
साथ ही मिलती है ।
नाम इज्जत शोहरत ,
जमाने में क्यों न मिली हो।
प्यार,दुलार,सुकून और आशिर्वाद,
तो बुजुर्गो के हाथो से ही मिलती है।
ये समझ उनको नही आता,
जो संघर्षरत होते है ।
पर वो इससे अनभिज्ञ नही है,
जो ये मुकाम हासिल कर चुके होते है।
जबकि जरूरत सर्वाधिक ,
संघर्ष रत को ही होती है।

अकेले ही चलने का दम

जब साथ न मिले किसी का ,
अकेले ही चलने का दम रखो।
जब बौछारे खुशी की कम और
सैलाब गमों का हो ,
तो खुद को अडिग रखो।
उठो बहुत हो चुका ,
सबका आस देखना।
खुद पर भरोसा रख,
करो पुरा सपना ,
अब उम्र भी गुजरने वाली है,
और वक्त भी ।
क्या पता परसो ,कल या
आज ही ,जिन्दगी खत्म,
फिर सोचना क्या इतना...?
इस ब्रह्मांड को फर्क नही पड़ता,
तेरे होने या न होने से।
पर तेरी चेतना विवश करती है,
ब्रह्मांड को भी,
तू सत्य की पराकाष्ठा पर,
खरा उतर तो सही ,
तू स्वाभिमान मे जी,
हां दम्भ मे नही ।
तू निकल अपने डर से,
तोड़ दे जंजीरे ।
तू पूछता फिरता है
जिनसे भाग्य अपने ,
वो स्वंय ईश्वर तो नही।
कर भरोसा निर्णयों पर अपने,
गर है गलत तो कर सही ।
पल-पल मे बदलते हो विचार अपना,
तुम क्यों नही छोड़ते हो,
कोई निशान अपना ।
उतार फेंक पुरानी केंचुली,
नई जिन्दगी सजा ले ।
निकलते है आँसू तो निकलने दे न।
जिस तरह शरीर का तापमान,
पसीने बराबर कर देते है।
उसी तरह मन की आकुलताओं को,
आँसुएं सम्भाल लेती है ।
तू बरस जाने दे,
विष को इन आँखो से।
जो अंदर ही अंदर ,
तन को खा जाते है।
तेरी विवशता तेरी
आत्मबल पर ,छा रहा है ,
इसे खुद पर बरसने मत देना ।
तुम खुशियो के हकदार हो,
खुद को तरसने मत देना ।
तू बढ़,तू कर हर अभिलाषा
पूर्ण होगी तेरी ।
जब साथ न मिले किसी का ,
अकेले ही चलने का दम रखो ।
तेरी खुशियां तेरी है ,
तो अपने गम भी अपने तक रखो।

त्रास मिटे देगा

सैकड़ो रहम भुला दिया रब के,
उसने तुझे एक गम क्या दिया।
अटूट विश्वास तो रख उसपर,
वो समुन्दर पार करा देगा ।
प्यासे की प्यास बुझा देगा।
सारे त्रास मिटा देगा ।
नभ को तेरे चरण छुआ देगा।
अन्तर्मन महका देगा ।
सारे भ्रांति मिटा देगा ।
मन प्रकाश से भर देगा।
तन अति पावन कर देगा ।
तेरे व्याकुल जीवन को ,
स्वर्गानुभूति करा देगा ।
अस्त्र शस्त्र सब व्यर्थ जहां,
नयनो से युद्ध जिता देगा ।
तेरी क्षणभंगुर काया को,
माया से भिन्न करा देगा ।
ज्ञान,विज्ञान,चातुर्य सब निरस्त,
तेरे निश्छल भाव से तर देगा।
खुद को वक्रिय तुझे कर देगा।
प्रेम वश छलकित अश्रु को,
वो व्यर्थ न जाने देगा।
बना मोती अपने किरीट पर,
वो जड़वा ही लेगा ।
सारे दुख वो हर लेगा ,
जीवन पथ पुष्पित कर देगा।

प्रेम नही मांगती है

प्रेम ..., प्रेम नही मांगती है,
आज्ञा वो स्वच्छंद होती है।
वो निहारती है दूर से,
आत्मसात करती है ।

हृदय से हृदय की अनवरत वार्ताए,
फैल जाती है वायुमंडल मे।
उतनी ही पवित्रता के साथ ,
जितना एक साधक के उच्चारित मंत्र।

प्रेम...देह को नही बांधता ,
स्वतः ही बंध जाता है आत्मा से।
वो न बोलता है ,न दिखाता है, भाव-भंगिमाए ।
वो बस छलक जाता है, चक्षु से।

वो अभिभूत कर जाता है,
बस एक झलक से ।
उसे स्पर्श की, आस नही होती।
कोई संवाद नही होता ।
बस शून्यता को लिए हुए,
एक मौन मंत्रणा होती है नयनो से।

प्रेम कभी मुख से स्वीकार,
नही करता खुद को ।
वह स्वतः दर्शित हो जाता है,
नयनो से,अधरो से,हृदय से।

मित्रता

जो मन की वेदना पढ़ जाए,
झूठी हँसी जो पकड़ पाए ।

बुझते दिये जो जला जाए,
बिना स्वार्थ तुमको अपनाए।

संग न रहे तो खालीपन आए,
एक टूटे दूजा मुरझाए ।

रिश्तो की कोई डोर नही है,
जाति धर्म का बोल नही है।

पर अपने-पन,कोई तोड़ नही है,
इस रिश्ते का कोई मोल नही है।

बस मन से मन को बान्ध जो जाए,
मित्रता वही कहलाए।

विभा श्रीवास्तव की कविताएं

यशोधरा

मै सुप्पाबुद्ध और पामिता
की बेटी यशोधरा,
करती विलाप सम्मुख बैठ,
तेरे ओ धरा।
क्या भूल हुई प्रिय मुझसे ,
कि नाता तुम तोड़ गए ।
नवजात शिशु को पालने मे ही,
सोता हुआ छोड़ गए।

क्या गृहस्थ जीवन,
ज्ञान मार्ग मे बाधक है।
अपने कर्तव्यों से मुहं मोड़ लेना,
ये कैसा साधक है ।
न कुमारी ,न विधवा ,
किसी मे न छोड़ा तुमने ।
यशोधरा के अश्रु पूछे ,
तू कैसा जातक है ।
विरह की ये सौगात ,
स्वेच्छा से दिया जिसने ।
उसे पति परमेश्वर
कहलाना,कैसा मानक है।

हे प्राणनाथ तुम निकल गए
चुपके से ,हर कर मेरे प्राण।
सारे दायित्व को ठुकरा कर ,
कर्तव्य विमूढ़ हो गए ।
कर देती त्याग देह मै भी ,
पर ममता धर्म से हूं बंधी ।
अब त्यागती हूं मै भी ,
सारे ठाठ राजसी ।
पत्नी धर्म भी निभाऊंगी
बन सन्यासनी।
मै सुप्पाबुद्ध और पामिता,
की बेटी यशोधरा ।
करती विलाप सम्मुख,
बैठ तेरे ओ धरा ।।

रास न आया

ऐ नज़र बहा दे,उसकी मुहब्बत को,
आँसुओ के जरिए।

थोड़ी राहत तो मिले,
ये तड़पता बहुत है।
और भिगोता है तकिये।

बहुत दुआ की थी ,
मगर कुछ काम न आया ।

दिल को भी दवा दी थी,
मगर आराम न आया ।

फ़िजा मे बेवफाई का कोहरा
इस कदर छाया ..कि

उस बेवफा को....,
वफा रास न आया ।।

लोगो का क्या

माना मैने तांख पर,
रख दिया खुद को,
तो मेरे गुणो और वक्त का,
अब कदर नही तुमको ।
माना तुम पर निछावर,
कर दिया हर पल अपना।
तो अहमियत हमारी ,
अब न रही तुमको।
ध्यान रखना,जो औरो के लिए
खुद को निछावर कर सकता है
वो खुद के लिए भी जी सकता है
जो दूजो का राह सरल करता है
वो खुद के लिए भी कर सकता है
तो ...
कठपुतली सी जिन्दगी ,
तुझे अलविदा,
अब जितने लम्हे मेरे नाम के
बचे है, उस पर मै खुद फिदा ।

माना लोग बदनाम तो करेंगे,
उंगलियाँ उठाएंगे सरेआम तो करेंगे
पर उदास मत होना।
सत्य छुप सकता है,बदल नही
लोगो का क्या ,न्याय तो भगवान करेंगे।

क्या दे पाओगे जवाब ?

निकलना चाहते है ,
चाहतो के सागर से।
बचना चाहते है ,
मुहब्बत के हर मंजर से,
बद्दुआ नही ,वफा चाहते है
हर दिल से,
पर क्या ये मुमकिन है ?

क्या चाहत का सागर,
वफा के दामन मे सिमट कर,
मुहब्बत के हर मंजर को ,
मुकम्मिल बना पाएगा ।
जहाँ बेवफाई इतनी हो,
वहां क्या ...
वफा की उंगली पकड़कर,
साथ चल पाएगा?

क्यूँ निकलना चाहते है ,
चाहतो के सागर से?
क्यूं बचना चाहते है,
मुहब्बत के हर मंजर से?

क्यूं बद्दुआ नही,
दुआ की चाहत है मुझे,
ये प्रश्न उठा ही क्यों ,कि
हम वफा चाहते है
किसी से ?

चाहत के सागर से निकलना,
इसलिए .....
कि हमे तैरना नही आता ,
हर मंजर से बचना इसलिए ,
कि हमे मुंह मोड़ना नही आता।
बद्दुआ की चाहत नही,
क्योंकि....
असर करता नही ,
कोई दवा इसपे ।
बेवफा बनना चाहते नही है,
क्योंकि .....
वफा कर सकते नही किसी से।

तो किसी मासूम की ,
मासूमियत से क्यो खेले,
जो राग हम गा न सकें,
उस तान को क्यूं छेड़े।
बस यही है उत्तर ,
इस सवाल का ,
क्या दे पाओगे जवाब....,
इस जवाब का...?

हर युग मे

है दीपोत्सव का त्यौहार
कि हो गया जगमग है,घर -द्वार।

बुझे हुए दीप जला लेना,
न हो तो,माटी से दिया बना लेना।

अंधियारा न रखना घर मे,
इस जहां को रौशन कर देना।

विचार लौह खण्ड की,
दीवार को भी भेदता है ।

मन के भीतर गंगा पड़ी है,
फिर भी तू ,कोरा रहता है।

नम्रता का ढोंग ,न चलता है,
न सादगी का.....।

जैसे भी हो हम ,
एक जुट हो जाना है ।

भारत की ही माटी का ,
इस बार दिया जलाना है ।

आज स्वर्ग धरती ,पर उतर आएगी,
' हे श्री राम '
तुम्हारा त्याग, हर युग मे रंग लाएगी ।

बाल मन का टसन

मेरा झूमता बचपन,
आंधियो मे उड क्यूं गया।
मै खेलने निकला ही,
कि सर पर बोझ लद गया।
क्यूं मेरी खिलखिलाहट ,
शोर बन गई ।
क्यूं बचपन को मेरे ,
गरीबी रौंद गई ।
कब मेरा बचपन मिटा,
हम जान न पाए
खुद को ही आईने मे देखा,
तो पहचान न पाए ।

मै देखता हूं जब इन,
हंसते हुई चेहरो को ।
तो आंसुऐ आंखो की,
पलक बंद कर देते है ।
जब चाहता हूं उन कदमो
के साथ चलने को ,
क्यूं गरीबी कदम रोक लेती है।

विवश करती हो किसी
और के जूठन उठाने को,
बर्बाद हुआ अन्न,
उत्सव मे उनके घर,
हमे खाना ही न
मिला जिंदा रहने भर,
जी लेते है ज़िन्दगी,गर
जूठन ही मिल जाए,
हमे खाने भर ।

फुटपाथ पर सोते है
सर्दी मे ओढ़ने को कुछ
ढूंढ ही लेते है, रोए क्या ?
गालो को भिगोने के लिए,
बरसात मे हर रात बैठे
ही भीग लेते है।

राह पथरीली हो
या कांटो भरी ।
इन पैरो को इनकी
आदत सी हो गई।
कंधो ने बोझ उठाए,
हाथ में चंद सिक्के आए,
खाना खरीदूं या कपडा
कुछ समझ ही न पाए ।

यूँ मेरा बचपन मिटा ,
हम जान न पाए ,
खुद को ही आईने मे देखा ,
तो पहचान न पाए ।।

अखंड भारत

सोने सा सुनहरा ,
धर्म धारी देश था।
ज्ञानियों में ज्ञान ,संस्कृति
व मानवता का उपदेश था।
वह अखंड भारत कहां गया,
क्यो अपना ही देश खण्डित हुआ।

राज किया अंग्रेजो ने सौ वर्षो तक,
आतंकवाद कबतक राज करेगा।
आजाद हुए उन्नीस सौ सैतालिस मे,
आंतक से देश कब तक डरेगा।

आजाद कराने मे देश ,
सब एक जुट हुऐ ।
इससे क्यूं है लाचार,
आतंकित सोच है ,
न हिन्दू मुसलमान हुए।

ये प्रश्न मेरा नही,
खुद तुम्हारे दिल की है।
कबतक सच से नजर चुराओगे,
कब खुद को आईना दिखाओगे।

जिस देश की गाथा ,
तुम गाते हो....।
वहां आंखो मे आंसू,
जमीं पर लहू कबतक देख पाओगे।

सूरज की तरह हो तुम

तुमै मेरे मांग का सिर्फ,सिंदूर ही नही हो।
सूरज की तरह हो ,तुम मेरे लिए ।
जिसकी किरणे मेरे ऊपर पड़ते ही,
मै पुष्प की भांति खिलने लगती हूँ ।
निखरने लगती हूँ,मचलने लगती हूं।
जिस तरह पत्तियों की पोरे,
सूर्य की किरणो को ,
खुद मे समाहित कर लेती है।
बस वैसे ही तुम्हारा प्रेम ,
मुझमे समाहित है।
तुम्हारा स्पर्श,तुम्हारा आलिंगन ,
हृदय तल से अछूता,
नही रह जाता है,
देवतुल्य.....हो जाता है ,वो प्रेम
जो भावनाओ से
पल्लवित हो जाता है।
करुणा से सरोबार हो जाता है।
सिर्फ ...
देह से देह का मिलन नही ,
अपितुआत्मा का अटूट ,
आलिंगन हो जाता है।
न बिछड़ने वाला,न छूटने वाला,
और न टूटने वाला ।
जो छूट जाए,टूट जाए,रूठ जाए,
वो प्रेम नही है ।
प्रेम मन पर लगा वो निशान है ,
जो जन्म-जन्मांतर तक नही छूटता।
जो मन और तन से समर्पित ,
अर्धांगिनी बना देता है।

बीज रूपी मन

यह गर्त मे गया हुआ एक समय है,
या ऊंचाईयों पर पहुंचने के लिए,
पीछे किया गया एक कदम ।
पता नही .....

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997

जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222

जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522

हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183

भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579

गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228

दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797

तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469

प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851

चंडीगढ़ टच्ठई सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159

इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496

शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640

बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148

रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122

कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711

भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547

जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143

बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055

विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219

बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416

धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551

बैंगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659

गोडा ब्यूरो - विभा श्रीवास्तव -91 73768 96768

सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106

नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468

पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416

लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465

मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500

भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332

Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

विभा श्रीवास्तव की कविताएं

पर अभी ठहराव जरूरी है
नीर पर ये लागू नही पर,
बीज पे पूरी है

भले ही गल चुकी है परत इसकी
डूब गया है अमिट अंधकार मे
फिर भी पल्लवित हो रहा है
बाहर आने को अपने
आकार मे, एक बार फिर,
ये नन्हा सा बीज रूपी मन ।

मेरे वृक्ष रूपी स्वप्न

कुख उबल रहा था मेरे अंदर,
धधक रही थी चिंगारी,
दिया तोड़ मैंने उसको ,
मेरे वृक्ष रूपी स्वप्न को,
काट रही थी जो आरी।
थी सृजन सत्यता की,
और मिथ्या खड़ी थी
लिए कुल्हाड़ी ...।
पर काट न सकी,
मेरी रूह के तेज को,
मेरी मन के वेग को ,
मेरे भाव , वेदना
और संवेदना को ।

सोचना भी मत

न तुझे इश्क करने
की इजाजत है मुझे,
न तुझे इल्म करने की ।
मुहब्बत आसां नही होता है
एक फसाना क्यूं लिखूं मै ,
फिर बिछड़ जाने की ।

है नजरो का दोष ,न तेरा न मेरा
दिल धड़क जाने की ।
क्यूं प्रसंग गढ़ूं मै इसकी ,
फिर टूट जाने की ।

तेरी आँखो मे समुन्दर है मुहब्बत का,
मुझे खींचती है अपनी ओर डूब जाने की।
है कसक उठती सीने मे मेरे भी,
रोक लेती हूं खुद को ,न बवंडर बन जाने दी।

मत देख मेरी तरफ ,
इन मुहब्बत भरी हसरतो से।
हम नदी के दो किनारे है ,
सोचना भी मत मिल जाने की ।।

शुक्रिया

बड़ी नफरते दी है
बड़ी कटुता दी है
बड़ी समस्या दी है
पर एक बात बताऊ।
हे परमात्मा... ,
तुमने कभी ...,
रूकने भी नही दिया
झुकने भी नही दिया
टूटने भी नही दिया
इसके लिए शुक्रिया,
शुक्रिया,शुक्रिया।।

लव यू जिन्दगी

बेरहम सी क्यूं
होती है ये जिन्दगी,
किसी तकदीर मे।

खुशी दिख जाती है,
कभी कभी ,
तसव्वुर या तस्वीर मे।

बहुत कुछ देकर
बहुत कुछ छीन
सा लेती है।

फिर भी
दिल मुस्करा कर जीने
की वजह ढूंढ ही लेती है
और जोर से कहती है
'लव यू जिन्दगी' ।

जब से तेरे साथ
आंख मिलाने लगी हूं।
ऐ जिन्दगी ....
मै गाने लगी हूं
तेरे पैंतरे अब है पता
तो वक्त से लड़
जाने लगी हूं...हां
मै मुस्कराने लगी हूं
खुद से जीत जाने लगी हूं।
और जोर से कहने लगी हूं
'लव यू जिन्दगी'।

कैसी

जब सब कुछ ,
पहले से लिखा है,
तो तकलीफ कैसी।
इल्ज़ाम कैसा और
तकरीर कैसी।

जो मन से रुखसत हुआ ,
तो फिक्र कैसी।
फुरसतो मे भी इल्म न हो ,
तो महफिलो मे जिक्र कैसी।

बेदाग सा दिखता है,
ये चाँद जमी से ।
करीब से देखा ,
तो खूबी कैसी ।

होंगे खिदमत गार
बहुत तुम्हारे ,
जो पाक न हो ,
वो मुहब्बत कैसी ।

अभिलाषा

'हम एक समुन्दर के दो किनारे हैं,
जहां एक दूजे को न देख पाएंगे,
न आवाज दे पाएंगे ....
न सुन पाएंगे.....
पर....
कुछ , ...आँखो के सामने ,
एक चलचित्र जैसा दिखता है।
देखकर उसे मुस्कराते है,
भूलकर सब कुछ ,
अतीत मे चले जाते हैं....।
तब ,
तुझे याद करके एक ,
खुशी सी आ जाती है ।
इन होठो पर .....,
हल्की हंसी सी आ जाती है ।

कभी - कभी यूं ही ,
ख्यालो मे आ जाया करो ,
बस इतनी सी है,
मेरे मन की यह अभिलाषा'
एहसास ही बहुत है मेरे लिए ,
नही जाननी मुझे ,प्रेम की परिभाषा।

खुद से ही

खुद से ही खुद को ,
जीतने की एक जंग है।

मेरी प्रतिस्पर्धा मे ,
कोई दूसरा नही आता।

है विपरीत दिशाएं,
तो क्या गम है ।

इस हठी मन को ,
हार मानना नही आता।

कुछ सफर अकेले ही,
तय करने पड़ते है ।

फिर चाहे सारा कारवां,
तुम्हारे साथ क्यूं न हो ।

जंजीरे

जंजीरे प्रथाओ की अब
टूट जाने दो,
संकीर्ण जाले मस्तिष्क से
अब छूट जाने दो।
क्यूं तड़प रही है बिन पानी
की मछली की तरह।
अब उसमे ज्ञान का
अमृत पड़ जाने दो।
न खुद टूटो न टूटने
को बाध्य करो ....,
स्त्री हो स्त्री का साथ तो दो ।
ढूँढती है ये आँखे अपने
नाम की जमीं बस
अब आसमां को भी
अपने आगे झुक जाने दो।

देख

तू देखकर न मुस्करा,
बस मुस्करा के देख।
ये जिन्दगी बदल जाएगी ,
गुनगुना कर तो देख।
तेरे दिल के टुकडो को उठाने ,
कोई नही आएगा।
तू टूटे ही क्यूं ,चट्टान सा
तनकर तो देख।
क्यू मोम सा पिघल जाता है ,
हर एक अश्रु पर,
तू लोहे सा रहेगा ,
लौह बन कर तो देख।
पतझड़ कितने भी आए ,
तू फिर से खिल जाएगा,
सदा अपने जड़ो से ,
जुड़ कर तो देख।
कस्तूरी तेरी तेरे पास ही है,
जमाने मे भटकना छोड़कर तो देख।
तेरे सिवा तुझे संभालने,
कोई न आएगा ,

विभा श्रीवास्तव

जीवनवृत्ति

'जीवन के हर मोड़ पर तेरा साथ रहा
हे प्रभु मुझे बस आपका ही आस रहा।'

मैं विभा श्रीवास्तव जन्म उत्तर प्रदेश के जिला बहराइच में एक जमींदार परिवार में हुआ ।
पिता प्रसिद्ध साहूकार थे और गरीबों के मददगार भी। उनका नाम स्व श्री रामेश्वर प्रसाद था ,माता श्रीमती मीना श्रीवास्तव।
हमारा एक संयुक्त परिवार था चार भाइयों में पिताजी सबसे छोटे थे ।एक हंसता खेलता परिवार , मैं और मेरा एक छोटा भाई ,पर होनी को कुछ और ही मंजूर था।
माता-पिता के विवाह के तीन वर्ष ही हुए थे की पिता का देहावसान हो गया मैं डेढ़ वर्ष की और मेरा भाई चार माह का था मां ने ससुराल की दहलीज पार न की और हम दोनों की परवरिश में लग गई।
उनकी नीरस सी जिंदगी को देखते-देखते में बड़ी हुई एक बेरंग सा जीवन।
समय चक्र अपनी रफ्तार से चलता रहा ,मेरी शिक्षा बहराइच के ही स्कूल और कॉलेज से संपन्न हुई मां की बेरंग ज़िंदगी में रंग ढूंढते ढूंढते मुझे रंगों से प्यार हो गया ।
घर में सभी त्यौहारों पर चौक मै खुद ही बनाती थी । नृत्य करते-करते कब गीत रचने लगी पता ही ना चला लिखने की कला मुझमें बचपन से थी ।
बहुत से पत्र पत्रिकाओं में भी मेरी रचनाएं छपना शुरू हो चुकी थी ,यह सिलसिला मेरे विवाह उपरांत भी चलता रहा।
अंग्रेजी से पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद विवाह उपरांत मैं कला की पढ़ाई शुरू की और शादी के 12- 13 वर्ष बाद कला की अध्यापिका बनना चुना। साथ ही एक प्रोफेशनल लेखिका भी बन चुकी थी, घर गृहस्ती और लेखन कार्य व कला सब साथ-साथ चलता रहा ।
इसी बीच अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करने का अवसर भी मिला। मां सरस्वती की कृपा से बहुत से सम्मान से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पब्लिकेशन- पत्रिकाएँ

निश्छल प्रहरी (बहराइच), समता फाउंडेशन (लखनऊ), भारत के साहित्य रत्न (E- book), काव्य प्रभा, हिन्दी साहित्य रत्न, कविता बहार, अंतराष्ट्रीय कवि सम्मेलन मे सहभागिता।

सम्मान-

'काव्य श्री' सम्मान, ' राष्ट्र प्रहरी ' सम्मान, ' भारत के साहित्य रत्न 'सम्मान', 'महादेवी वर्मा सम्मान और भी सम्मान से सम्मानित ।

पुस्तक-

1. विभांजलि 'आईना जिंदगी का ...'
2. मंथन
3. प्रेमानुभूति (काव्य संग्रह)

अब तक की जीवन का अनुभव कुछ खट्टा - मीठा रहा ,बहुत से समझौते भी किया पर स्वाभिमान के साथ समझौता मुझे मंजूर न था मैं बचपन से एकांत प्रवृत्ति की थी ,मेरी खुद की ही एक दुनिया है ।
'खुद से ही खुद के जीतने की एक जंग है,
मेरी प्रतिस्पर्धा में कोई दूसरा नहीं आता।'
और जीवन आगे बढ़ता रहा।

धन्यवाद।

रिती

विभा श्रीवास्तव

अरे यह मेरी जगह है मैं पहले आई हूं इसलिए मैं यहां बैठूंगी पर आकांक्षा ने उसकी बात नहीं मानी ,मैं कुछ नहीं जानती मुझे यहां बैठना है बस ,पूरी क्लास में तुम कहीं भी बैठ जाओ।
रिती - कल भी किसी ने मेरा बैग पीछे रख दिया था, और मुझे पीछे ही बैठना पड़ा मतलब कल भी तुमने ही मेरा बैग पीछे किया था।
आकांशा - हां किया था तो उसकी दो सहेलियां भी उसके हां में हां मिला रही थी।
रिती स्कूल में नयी थी इसलिए उसकी कोई दोस्त नहीं थी ।

रिती मैं मैम से बोलूंगी तुम्हारे बारे में आकांक्षा- जा बता दो ।
सभी छात्राएं प्रार्थना के लिए ग्राउण्ड में जाने लगे।
रिती पीछे की सीट पर बैठकर अपना बैग पकड़ कर रो रही थी तब तक सीनियर क्लास की छात्राएं क्लास चेक करने के लिए वहां पहुंची और रिती को रोते हुए देखा तो पूछने लगी क्या हुआ ?क्या नाम है तुम्हारा? और तुम क्यों रो रही हो ?तो रीति ने पूरी घटना बताई रीति की आंखों से आंसू गिरते जा रहे थे सीनियर छात्र शिवी रिती का बैग उठाया और प्रथम पंक्ति में लाकर रख दिया और आकांक्षा का बैग हटा दिया।
रिती अरे दीदी आपने तो आकांक्षा का बैग हटा दिया वह मुझसे झगड़ा करेगी तब मैं क्या करूंगी ?
शिवी तेज आवाज में बोली यहां तुम्हारे लिए लड़ने कोई नहीं आएगा अपने हक के लिए खुद ही लड़ना पड़ता है। अगर तुम सही हो तो अपने हक के लिए खुद ही बोल ो मैं चाहूं तो उसे सजा दिला सकती हूं पर आजकल बहुत सीधा होना भी गलत है। जो गलत को गलत और सही को सही भी ना कह सके ,जो रोते हैं वह सिर्फ रोते ही रहते हैं। शिवी की आंखों में उसे एक जुनून सा दिखा ।जो रिती को सिर्फ समझा नहीं रही थी, बल्कि उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे भविष्य के लिए तैयार कर रही थी।
रीति के मन में एक आवाज आई गलत करो मत और गलत सहो मत और सभी प्रार्थना के लिए निकल पड़े प्रार्थना समाप्त हुई सभी छात्राएं कक्षा में वापस आए ।
आकांक्षा अपना बैग प्रथम सीट पर ना पाकर आग बबूल ा हो गई उसने फिर से रिती का बैग हटाने की कोशिश की ।
इस बार रिती पीछे हटने वाली न थी।आकांक्षा रिती के बैग को हाथ भी ना लगा सकी।
आकांक्षा की आवाज तेज हो गयी मेरा बैग किसने हटाया?
तभी रीती बोली 'मैं' अब रिती की आंखों में आंसू नहीं थे बल्कि चिंगारी थी।
आकांक्षा बोली 'तुम'।
रिती-' हां ' मैं क्योंकि..... मैं पहले आई थी और अब अगर तुमने यह हरकत दोबारा की तो तुम्हें इसकी सजा भी मिलेगी रिती का यह रूप देखकर आकांक्षा भी सहम गई और आगे से उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। उसका व्यवहार भी रिती के प्रति नरम हो चुका था । और ये सच भी है कि निर्बल का कोई अपना नहीं होता।